14 डॉ० भीमराव अम्बेडकर

संध्या हो रही है। पश्चिम दिशा में लाली फैल रही है। पक्षी चहचहाते हुए अपने घोंसलों की ओर लौट रहे हैं। बड़ौदा के राजमार्ग पर पेड़ के नीचे एक युवक बैठा है। वह फूट-फूटकर रो रहा है। आँसुओं का झरना लगातार झर रहा है। कोई धीरज नहीं देता उसे, कोई राह नहीं दिखाता उसे।

अचानक वह उठ खड़ा हो जाता है। आँसू पोछकर सोचता है, ''मैं अछूत हूँ, यह पाप है। किसने बनायी है छुआछूत की व्यवस्था? किसने बनाया है किसी को नीच, किसी को ऊँच? भगवान ने? हर्गिज नहीं। वह ऐसा नहीं कर सकता। वह सबको समान रूप से जन्म देता है। यह बुराई मनुष्य ने पैदा की है। मैं इसे मिटाकर रहूँगा।**

कुछ निश्चय करता है और वह युवक मुंबई लौट आता है। फिर वह जो कुछ करता है, उसके कारण आज सारा देश ntgaबा साहब के नाम से स्मरण करता है।

मध्यप्रदेश के महू नगर में रामजी सकपाल नाम के एक सूबेदार मेजर थे। वे महार जाति के थे। 14 अप्रैल सन् 1891 ई. को उनके घर चौदहवीं संतान ने जन्म लिया। उनकी अल्प आयु में ही माता भीमाबाई का देहान्त हो गया। फिर चाची मीराबाई ने उसका पालन-पोषण किया। वे बालक को प्यार से 'भीवा' कहकर बुलाया करती थीं। बाद में यही बालक 'भीमराव रामजी अम्बेडकर' कहलाए।

जिस वर्ष भीमराव का जन्म हुआ, उसी वर्ष रामजी नौकरी से छुट्टी पाकर रत्नागिरि के दपोली स्थान पर आ गये थे। यहीं भीमराव को पहली बार एक मराठी स्कूल में भर्ती कराया गया। चार वर्ष बाद वे पिता के साथ सतारा आ गये और सरकारी स्कूल में भर्ती हुए।

सन् 1905 में रामाबाई नाम की कन्या से भीमराव की शादी हो गयी। उस समय वह नौ

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

वर्ष की थी। शादी के बाद भीमराव अपने पिता के साथ मुंबई चले गये। वहाँ वे एलफिंस्टन स्कूल में भर्ती हुए। इस स्कूल में छुआछूत की कुप्रथा नहीं थी।

सन् 1907 में भीमराव ने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। महार जाति के लिए यह बहुत गौरव की बात थी। घर में खूब खुशियाँ मनायी गयीं। भीमराव एलफिंस्टन कॉलेज में पढ़ने लगे। बड़ौदा के महाराज सयाजीराव गायकवाड़ ने प्रसन्न होकर उन्हें 25 रुपये मासिक छात्रवृत्ति देना आरम्भ कर दिया। सन् 1913 में वे बी.ए. उत्तीर्ण हो गये। महाराज ने उन्हें बड़ौदा बुलाया और दरबार में नौकरी दे दी। दुर्भाग्य से इसी वर्ष उनके पिता का स्वर्गवास हो गया।

महाराज के दरबार में भीमराव को कट्टरपंथियों की घृणा का पात्र बनना पड़ा। चपरासी तक उनको फाइलें फेंककर देते थे। तंग आकर भीमराव ने नौकरी छोड़ दी। वे फिर महाराज से छात्रवृत्ति पाने में सफल हुए और उच्च शिक्षा के लिए कोलंबिया (अमेरिका) चले गये।अपनी महार जाति के वे पहले विद्यार्थी थे, जिन्हें विदेश जाने का अवसर मिला।

कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़ते समय भीमराव को अनेक नये अनुभव हुए। वहाँ उन्हें सबका प्यार और समानता का व्यवहार मिला। उन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि पायी। सन् 1916 में वे कोलंबिया से लंदन पहुँचे। वहाँ एक वर्ष रहकर वे मुंबई लौट आये। महाराज गायकवाड़ ने उनको सेना में सचिव के पद पर बड़ौदा बुला लिया, किन्तु वहाँ फिर उनको घृणा का शिकार होना पड़ा। अधीनस्थ कर्मचारी उनसे घृणा करते थे। कार्यालय में उनको पीने के लिए पानी तक नहीं मिलता था। इस व्यवहार से उनका हृदय टूट गया। उन्होंने आँखों में आँसू भरकर नौकरी छोड़ दी और मुंबई जा पहुँचे।

विदेश में रहकर डॉ. अम्बेडकर ने दो पुस्तकें लिखीं। धीरे-धीरे उनकी विद्वता की धाक जमने लगी। मुंबई के एक कॉलेज में उन्हें प्रोफेसर के पद पर नियुक्त कर लिया गया किन्तु यहाँ भी संघर्ष कम नहीं हुआ। किसी प्रकार भीमराव ने दो वर्ष निकाले। अन्त में यहाँ भी उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। सन् 1920 में उन्होंने छुआछूत की बुराई से लड़ने के लिए 'मूकनायक' नामक साप्ताहिक अखबार निकालना आरंभ किया। साधनों के अभाव में कुछ समय बाद उसे भी बंद करना पड़ा। भीमराव पढ़ने के लिए फिर लंदन चले गये। वहाँ तीन वर्ष रहकर उन्होंने अर्थशास्त्र में डी.एससी. की उपाधि प्राप्त की। सन् 1923 में वे मुंबई लौट आये

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED

और उन्होंने वकालत आरंभ कर दी। एक वर्ष बाद कुछ मित्रों की सहायता से उन्होंने 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की। दलितों की समस्याएँ हल करना इस सभा का मुख्य उद्देश्य था। सन् 1927 में उन्होंने 'बहिष्कृत भारत' नामक समाचार पत्र भी निकाला। इसी वर्ष वे मुंबई विधान-सभा के सदस्य बनाये गये।

डॉ. अम्बेडकर समाज में दलित को समानता का अधिकार दिलाना चाहते थे। वे उनकी आर्थिक हालत सुधारने के लिए संकल्प ले चुके थे। दलितों का इतिहास बताने के लिए उन्होंने 'शूद्र कौन थे' नामक पुस्तक लिखी, जो बहुत लोकप्रिय हुई। भारत के वायसराय ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें अपने सचिव-मंडल का सदस्य बनाया।

सन् 1947 में भारत के स्वतंत्र होने पर वे संविधान-सभा के सदस्य चुने गये। संविधान का प्रारूप उन्हीं की अध्यक्षता में तैयार हुआ। उन्होंने उसमें दलितों को समानता का अधिकार दिलाया। राष्ट्र की एकता के लिए भी उन्होंने कई बातें संविधान में सम्मिलित करायीं।

15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार बनी। डॉ. अम्बेडकर भारत सरकार के कानून मंत्री बने। डॉ. अम्बेडकर ने पुराने कानूनों में कई सुधारों की नींव रखी। सन् 1951 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

सरकार से अलग होकर वे पूरी शक्ति से दलितों की सेवा में जुट गये। दलित समाज उन्हें देवता की तरह पूजने लगा। वे जहाँ जाते थे, 'जय भीम' के नारों से आकाश गूँज उठता था। रूढ़िवादियों के आगे वे झुकना नहीं जानते थे। उन्होंने दलितों को राय दी, 'तुम सब बौद्ध बन जाओ।' उन्होंने सन् 1955 में 'भारतीय बौद्ध महासभा' की स्थापना भी कर डाली। एक वर्ष बाद नागपुर में उन्होंने स्वयं भी बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। इस घटना से रूढ़िवादियों में बड़ी खलबली मच गयी।

दुर्भाग्य से दलितों का यह नेता अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहा। 6 दिसम्बर, सन् 1956 को अचानक लाखों पीड़ितों को छोड़कर डॉ. अम्बेडकर स्वर्गवासी हो गये।

दलित कहा जाने वाला समाज अब भी डॉ. अम्बेडकर को 'बाबा साहब' कहकर सम्मान देता है। वे देश के पिछड़े और दलित समाज के प्राण थे। बचपन से ही उनमें कठिन परिश्रम

© BSTBPC
NOT TO BE PUBLISHED

करने की आदत थी। नित्य 18 घंटे पढ़ना उनके लिए सहज बात थी। सिनेमा और गप-शप से वे दूर रहते थे। कठिनाइयाँ उनका मार्ग नहीं रोक पाती थीं। वे जो सोचते, वही करते थे। उनका भाषण बहुत प्रभावशाली होता था। तर्क करने की उनमें अनोखी शक्ति थी।

डॉ. अम्बेडकर किसी भी धर्म के विरोधी नहीं थे। वे धर्म को मनुष्य के लिए बहुत आवश्यक मानते थे। उनकी लड़ाई तो उन बुराइयों से थी, जिन्हें मनुष्यों ने धर्म में उत्पन्न कर दिया है। बौद्ध धर्म को वे इसलिए पसंद करते थे कि वह समानता पर आधारित है। वे कहा करते थे कि वेद, शास्त्र,स्मृति, पुराण आदि को कुछ लोगों ने छुआछूत का हथियार बना लिया है।

डॉ. अम्बेडकर इसलिए महान हैं क्योंकि उन्होंने छुआछूत के पाप को नष्ट करने का प्रयत्न किया। उनके प्रयत्नों से दलितों को कानून में समानता का अधिकार मिला। आज दलित बालक विद्यालयों में सामान्य बालकों के साथ बैठकर पढ़ते हैं, खाते-पीते और खेलते-कूदते हैं। गाड़ियों, होटलों, तीर्थों, मंदिरों आदि सभी जगह उन्हें समानता का अधिकार प्राप्त है। हजारों वर्षों के भारतीय इतिहास की यह बहुत बड़ी घटना है। एक बहुत बड़े वर्ग को छुआछूत के पाप से डॉ. अम्बेडकर ने छुटकारा दिलाया। आने वाली पीढ़ियाँ बाबा साहब अम्बेडकर के महान कार्यों को स्मरण कर गौरव का अनुभव करती रहेंगी।

शब्दार्थ

स्मरण - याद

आधारित - आधार में, सहारे में

बहिष्कृत - बाहर निकाला हुआ

रूढ़िवादी -पुरानी विचारधारा को मानने वाले

प्रभावशाली-प्रभाववाला, आकर्षक

समानता -बराबरी

रत्नागिरि-महाराष्ट्र के एक जिले का नाम

स्वर्गवासी-मृत्यु को प्राप्त करना

© BSTBPC
WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

टिप्पणी-

1. वेद - आर्यों के प्राचीनतम धार्मिक ग्रंथ। इनकी संख्या चार है-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद।
2. शास्त्र - हिन्दुओं के वे धार्मिक ग्रंथ, जो लोगों के हित और अनुशासन के लिए बनाये गये।
3. स्मृति - हिन्दुओं के धर्मशास्त्र, जिनमें धर्म, दर्शन, आचार-व्यवहार, शासन-नीति आदि का विवेचन है।
4. डी.एससी.- डॉक्टर ऑफ साइंस, विज्ञान में सर्वोच्च उपाधि।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. डॉ. अम्बेडकर के योगदानों की चर्चा कीजिए।
2. डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म क्यों स्वीकार कर लिया?
3. डॉ. अम्बेडकर ने बड़ौदा महाराज की नौकरी क्यों छोड़ दी?
4. डॉ. अम्बेडकर के विचारों से आप कहाँ तक सहमत है और क्यों?
5. **नीचे स्तम्भ 'क' में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन से जुड़ी कुछ प्रमुख घटनाओं का विवरण है तथा स्तम्भ 'ख' में उन घटनाओं के वर्ष दिए गए हैं। इन्हें सही क्रम में मिलान कीजिए।**

स्तम्भ 'क'	स्तम्भ 'ख'
डॉ. अम्बेडकर का जन्म	1913
डॉ. अम्बेडकर ने हाई स्कूल की परीक्षा पास की	1905
डॉ. अम्बेडकर ने बी.ए. की परीक्षा पास की	1891
डॉ. अम्बेडकर की शादी	1907
'मूकनायक' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन	1956
डॉ. अम्बेडकर की मृत्यु	1920

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED
© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

पाठ से आगे-

1. डॉ. अम्बेडकर को 'भारतीय संविधान का जनक' क्यों कहा जाता है?

2. डॉ. अम्बेडकर को 'बाबा साहब' उपनाम से जानते हैं। कुछ और भी महापुरुषों का उपनाम है। उनके नाम और उपनाम लिखिए।

3. 'बाबा साहब' किस प्रकार के भारत को देखना चाहते थे?

व्याकरण-

1. इन शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए।

महतवपूर्ण, परीस्थीती, निसचय, आत्मविसवास, रत्नागीरी, अधयापक ।

2. "स्वामीजी, मैं ईश्वर का दर्शन करना चाहता हूँ। क्या आप ऐसा कर सकेंगे?"
साधु ने तपाक से कहा, "अरे! क्यों नहीं! कल सवेरे यहाँ आ जाना। हम लोग साथ-साथ सामने के पहाड़ की चोटी पर चलेंगे। वहाँ जाकर मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँगा"
उपर्युक्त अंश में उद्धरण चिह्न (" "), विस्मयादिसूचक चिह्न (!), प्रश्नसूचक चिह्न (?), योजक चिह्न (-), अल्प विराम चिह्न (,) तथा पूर्ण विराम चिह्न (।) हैं।

इस पाठ में भी इस तरह के विराम चिह्नों का प्रयोग किया गया है। उसका कुछ अंश लिखिए।

© BSTBPC WEB COPY ,NOT TO BE PUBLISHED

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

कुछ करने को-

1. **इस वर्ग पहेली में पाँच महापुरुषों के नाम छिपे हैं। उनके नाम मोटे लिखे गए अक्षर से शुरू होता है। ढूँढ़कर लिखिए।**

ह	**सु**	त्मा	वा	ना	प्र
डा.	च	बो	न्द्र	र	न्द्र
भा	सा	**म**	ने	गाँ	ल
हा	ष	**र**	द	गो	र
ला	थ	ह	न्द्र	रू	जे
वी	रा	**ज**	स	धी	टै

2. आपकी कक्षा में विभिन्न परिवेश के बच्चे पढ़ते हैं। आप सहपाठियों के घर पर जाकर देखिए कि वहाँ क्या-क्या होता है? उनके अभिभावकों से बातचीत कीजिए और अपने मित्रों से उस पर चर्चा कीजिए।
3. भारत के संविधान की प्रस्तावना साफ-साफ एवं सुंदर अक्षर में लिखिए और कक्षा में सुनाइए।
4. पाठ में आये डॉ. अम्बेडकर के कार्यों की सूची बनाकर अपने वर्ग कक्ष में टाँगिये।

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED